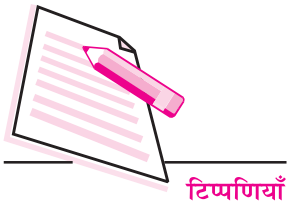

टिप्पणियाँ

2

पर्यटन उद्योग एवं इसका गठन

पर्यटन शब्द से तात्पर्य उन यात्रियों की उन गतिविधियों से है, जो अपने सामान्य निवास या काम के परिवेश से बाहर किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थल पर, केवल अपने खाली/अवकाश के समय को व्यतीत करने के लिए अथवा व्यवसायिक या किसी अन्य उद्देश्य से एक वर्ष से कम अवधि के लिए यात्रा करते हैं। वे अपने गंतव्य स्थान पर जाकर धन कमाने या मानदेय प्राप्ति के लिए कोई भी कार्य नहीं करते। पर्यटन को विश्व में तेज गति से बढ़ने वाले उद्योगों में से एक माना जाता है, परंतु यह व्यवस्थित उद्योग नहीं है, क्योंकि इसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्र शामिल हैं। यह एक बिखरे हुए उद्योगों में से एक है, परंतु किसी उद्योग को चलाने के लिए कुछ अपेक्षाओं को पूरा करना पड़ता है। उत्पाद को उपयोगी रूप में लाने के लिए तथा चलाने के लिए समुचित जगह, पूंजी और आधारभूत ढांचे की आवश्यकता होती है, इसलिए एक कार्य बल (वर्कफोर्स) का होना अनिवार्य है। आखिर में जब कोई उत्पाद, उद्योग से निर्मित होकर बाहर आता है तो इसके उपभोग के लिए एक बाजार का होना आवश्यक होता है। उद्योग की शर्तों को पूरा करने के लिए इन सब का होना आवश्यक है। लेकिन पर्यटन एक अलग प्रकार का उद्योग है। विश्व की अनेक सरकारों की नीतियों में इसे एक उद्योग माना जाता है। अतः इस पाठ में हमने पर्यटन की अवधारणा, ढांचे और घटकों को एक उद्योग के रूप में परखने की कोशिश की है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- पर्यटन उद्योग के महत्व की व्याख्या कर सकेंगे;
- पर्यटन उद्योग के घटकों का वर्णन कर सकेंगे;
- एक पर्यटक के लिए आवश्यक सेवा की व्याख्या कर सकेंगे;
- पर्यटन उद्योग में उभरती नई प्रवृतियों को स्पष्ट कर सकेंगे तथा
- देश में पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में भारत सरकार की भूमिका पर चर्चा कर सकेंगे।

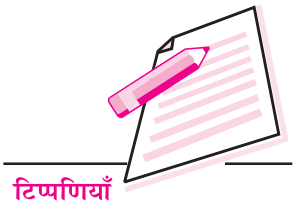

2.1 उद्योग के रूप में पर्यटन का महत्व

पर्यटन, विश्व में सबसे अधिक श्रमिकों वाले उद्योगों में से एक है। पूरे विश्व में यह अनगिनत लोगों को रोजगार देने वाला उद्योग है। इसे एक उद्योग समझा जाता है, परंतु यह अर्थव्यवस्था के अधीन तृतीय क्षेत्र (टर्शियरी सेक्टर) में आता है। पारंपरिक दृष्टि से कहें तो किसी भी उद्योग में कच्चे माल को तैयार माल में बदला जाता है और उस निर्मित माल को प्रयोग के लिए और अधिक उपयोगी बनाया जाता है, परंतु पर्यटन उद्योग में कच्चे माल और तैयार उत्पाद में अन्तर चिन्हित नहीं हो सकता और न ही तैयार माल स्पष्ट दिखाई देता है। किसी मुद्दे पर हम यह कह सकते हैं कि पर्यटन उद्योग के लिए किया गया निवेश (इनपुट) पर्यटकों द्वारा प्रयोग किए जाने वाला तैयार उत्पाद हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक टूरिस्ट गाइड इस उद्योग को चलाने वाला कार्यबल होता है। वे ऐसे व्यक्ति हैं, जो पर्यटकों का मार्गदर्शन करते हैं और गंतव्य स्थानों के संबंध में विस्तार से वर्णन करते हैं। पर्यटकों के लिए यह जानकारी बहुत सहायक हो सकती है, लेकिन जब उसी गाइड को उसके द्वारा की गई सेवाओं के लिए पर्यटकों द्वारा भुगतान किया जाता है, तो वे पर्यटन उद्योग के लिए तैयार उत्पाद का रूप ले लेते हैं।

यह किसी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए बहुत आवश्यक साधन है। यह क्षेत्र के स्थानीय लोगों को विभिन्न प्रकार के रोजगार प्रदान करके वहाँ की आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है। पर्यटन के विकास में बहुत लोग शामिल होते हैं। ये लोग औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र से हो सकते हैं। साथ ही अनौपचारिक क्षेत्र से भी हो सकते हैं।

पर्यटन, होटल उद्योग में उच्च योग्यता प्राप्त विशेषज्ञों, सूचना-प्रौद्योगिकी और संचार क्षेत्र, बड़े और मध्यम परिवहन, गाईड्स, टिकट बेचनेवालों, होटल बुक करने वालों, खाद्य और पेय क्षेत्र इत्यादि के लोगों के साथ-साथ फेरी वालों, रिक्शावालों, ऑटो और टैक्सी चालकों को भी अवसर प्रदान करता है। सही अर्थों में यह पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने वाले उद्योग के रूप में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करने वाला सेवा-उद्योग है। लोगों को आजीविका प्रदान करके यह अनेक सामाजिक-आर्थिक समस्याओं जैसे गरीबी, अल्प विकास और सामाजिक भेद-भाव को दूर करने में सक्षम है।

पर्यटन ऐसा माध्यम भी है जिसके द्वारा वैश्विक और क्षेत्रीय सामाजिक-राजनीतिक समरसता को स्थापित किया जा सकता है। सामाजिक-आर्थिक अवसर पैदा करना तथा अमीर और गरीब के बीच दूरी को कम करने में सहयोग देना अब बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। पर्यटन की पैरवी करने वाले इसको शान्ति उद्योग मानते हैं, जो विश्व शान्ति प्रक्रिया के माध्यम से सन्तुलन स्थापित करता है। अतः उत्तरदायी और दीर्घजीवी तरीके से विकसित और प्रचलित पर्यटन, पर्यटक स्थलों पर शान्ति और खुशहाली लेकर आएगा और क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर यह भौगोलिक-राजनीतिक स्थायित्व लाएगा।

2.2 पर्यटन उद्योग के घटक

2.2.1 पर्यटन उद्योग के लिए स्थल

स्थल एक आधारभूत अवयव (घटक) है, जिसके कारण पर्यटन होता है। यह एक से दूसरे क्षेत्र में स्थल का परिवर्तन ही है। पर्यटन के लिए स्थल से अभिप्राय लगभग पूरा विश्व है। पर्यटन के दृष्टिकोण से विश्व के कुछ भागों की अधिक माँग होती है जबकि अन्य उतने महत्वपूर्ण नहीं होते। इसके कारण क्षेत्र-विशिष्ट होते हैं। पर्यटकों के लिए आवश्यक सेवाओं का उपलब्ध होना किसी क्षेत्र को संसाधनपूर्ण बना देता है। दूसरी ओर सेवाओं का उपलब्ध न होना अथवा गुणात्मक या मात्रात्मक रूप से कम उपलब्ध होना क्षेत्र की माँग को घटा देता है। पर्यटकों के लिए किसी क्षेत्र की सुविधाओं में परिवहन, होटल, स्वस्थ और स्वच्छ भोजन इत्यादि आते हैं। पर्यटन विकास में सुरक्षा और बचाव बहुत महत्वपूर्ण पक्षों में से एक है। आतंकवाद के नाम पर बदनाम अथवा राजनीतिक दृष्टि से अस्थिर क्षेत्र में निश्चित तौर पर अधिक पर्यटक नहीं आएंगे। इसलिए किसी स्थल पर पर्यटन की वृद्धि और विकास उस क्षेत्र में पर्यटक उत्पादों के विकास पर निर्भर करता है।

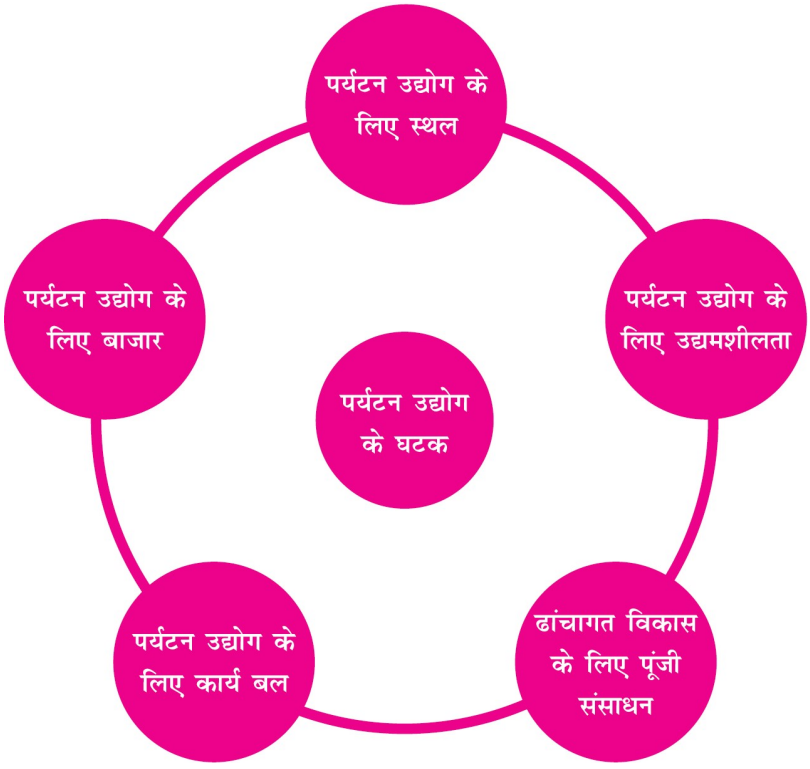

चित्र 2.1: पर्यटन उद्योग के अंग

2.2.2 पर्यटन उद्योग के लिए उद्यमशीलता

किसी उद्योग के स्थापित होने के लिए उसके व्यापार (कारोबार) को चलाने की जिम्मेवारी लेने वाला कोई होना चाहिए। क्योंकि लोग बड़ी संख्या में पर्यटकों की रुचि के स्थलों पर भ्रमण करने

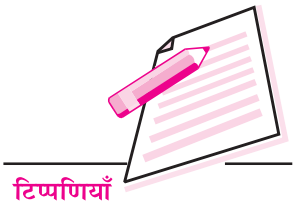

जाना चाहते हैं। अत: भ्रमण करने आए पर्यटकों को सुविधाएँ देने की जिम्मेवारी उद्यमी लेता है। बदले में उन्हें अन्य स्थानीय लोगों के साथ आय प्राप्त होती है। लेकिन अनेक ढांचागत विकास कार्य किसी व्यक्ति/संगठन अथवा संस्था द्वारा नहीं अपितु राज्य सरकार द्वारा करवाए जाते हैं। इसलिए इन सबको भी पर्यटन के विकास में उद्यमी माना जाता है।

2.2.3 पूंजी : ढांचागत विकास के लिए संसाधन

किसी क्षेत्र में किसी उद्योग का ढांचागत विकास करने के लिए बहुत बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है। प्राय: यह पूंजी सरकार द्वारा विभिन्न नीतियों के अन्तर्गत प्रदान की जाती है। ढांचागत विकास केवल पर्यटन उद्योग तक ही सीमित नहीं होता अपितु यह तो क्षेत्र और लोगों की सामान्य भलाई के लिए होता है। क्षेत्र का देश अथवा विश्व के साथ जुड़ा होना, नियमित बिजली की आपूर्ति, होटल, अच्छी कानून-व्यवस्था, पर्यटकों के लिए आकर्षण तथा अच्छे भोजन की सुविधाएँ पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं में से कुछ हैं। इनमें से अधिकांश सरकार द्वारा दी जाती हैं तथा कुछ को विभिन्न इच्छुक औद्योगिक संस्थानों, संगठनों, उद्यमियों अथवा होटलों द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है।

2.2.4 पर्यटन उद्योग के लिए कार्यबल

पर्यटन के कई घटक हैं, जिनपर इसका ढांचा निर्भर करता है। इनमें से परिवहन, निवास, भोजन, मनोरंजन, शिष्टाचार, पर्यटक हेतु आकर्षण, यात्रा प्रचालक, ट्रेवल एजेंट्स और अन्तिम रूप से पर्यटक बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह सभी अलग इकाईयाँ नहीं हैं, अपितु सब परस्पर जुड़ी हुई हैं। उनकी अन्त:क्रिया एक जाल की तरह होती है जो अन्त में पर्यटकों की सेवा ही होती है। पर्यटन उद्योग तब फलता-फूलता है जब पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सुयोग्य कार्यबल उपलब्ध होता है। मानवशक्ति को कुशल, अर्द्धकुशल और अकुशल समूहों में बाँटा जा सकता है। सबको पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। उदाहरण के लिए एक कुशल व्यक्ति को टिकट बुक करना, होटल प्रबन्ध का ध्यान रखना, मनोरंजन प्रदान करना, गाईड तथा उच्च गुणवत्तापूर्ण भोजन प्रदान करना होता है। स्थानीय परिवहन टैक्सी चालक अथवा अन्य सहायक कर्मचारियों द्वारा प्रदान किया जाता है। अकुशल कार्यबल की भी आवश्यकता होती है और प्रयोग किया जाता है। ढांचा विकसित करना भी मिलकर काम करने वाले सभी प्रकार के कार्य बलों से जुड़ा हुआ है।

2.2.5 पर्यटन उद्योग के लिए बाजार

आपके विचार से पर्यटन कब फलता-फूलता है? उत्तर है, जब ढांचागत सुविधाएँ उपलब्ध करवाया जाता है, प्राकृतिक आकर्षण हों, गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदाता हों, कानून व्यवस्था उच्च श्रेणी की हो और बड़ी संख्या में पैसे और खाली समय के साथ लोग उपलब्ध हों तो पर्यटन फले-फूलेगा ही। पर्यटक अपनी इच्छानुसार प्राप्त की गई सेवाओं का उपभोक्ता होता है। मूर्त रूप में प्रदान की गई सेवाओं के अतिरिक्त पर्यटक अमूर्त सेवाओं का भी उपयोग करते हैं। मूर्त सेवाओं में भौतिक रूप से उपलब्ध होटल, भोजन, सोविनियर, टैक्सियाँ, गाईड्स और सहायक आते हैं; परन्तु अमूर्त सेवाएँ बिल्कुल भिन्न होती हैं। इनमें खाने का स्वाद, शान्त वातावरण, संस्कृति, मनोरंजन, स्वागत और

सौन्दर्य बोध इत्यादि शामिल होता है। पर्यटक इन सब का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रयोग करते हैं। किसी क्षेत्र में पर्यटन उद्योग की वृद्धि एवं विकास के लिए ये सभी अच्छे कारण हैं। पर्यटन विपणन से पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विकसित उत्पादों को बढ़ावा मिलता है।

प्राय: उद्योगों में एक जैसी वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है और वे निरन्तर एक दूसरे से मुकाबला करते रहते हैं। उदाहरण के लिए चिप्स का उत्पादन, ठण्डे पेय, आइसक्रीम, कपड़े, कागज़, सीमेन्ट, लोहा इत्यादि अपने वर्गों में एक दूसरे के साथ मुकाबला कर रहे हैं। इस प्रकार का मुकाबला बहुत कड़ा नहीं होता अपितु एक दूसरे का उत्पाद और सेवाएँ उपलब्ध करवाने में पूरक होता है। एक एयरलाईन, होटल, ट्रेवल एजेंट भले ही अपने वर्ग में एक दूसरे के साथ मुकाबला कर रहे हों परन्तु उस क्षेत्र में पर्यटन की गतिविधियों को सहारा देते हैं। पर्यटन के लिए वे पर्यटन की वृद्धि को समरस बनाते हैं जो पर्यटकों की सहायता करता है। उनका उद्देश्य पर्यटकों को उनके चयन और आवश्यकतानुसार सबसे बेहतर सेवाएँ और सुविधाएँ प्रदान करना है।

पर्यटन उद्योग में निवेश और परिणामों को बहुत स्पष्ट ढंग से विलग नहीं किया जा सकता। आपूर्ति के सन्दर्भ में अन्य उद्योगों को उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं से परिभाषित किया जाता है। पर्यटन के सन्दर्भ में यह उद्योग पर्यटकों की माँग से चलता है। क्षेत्र में अन्य सुविधाएँ पर्यटकों की माँग के अनुसार विकसित एवं प्रदान की जाती है।

क्रियाकलाप 2.1

अपने क्षेत्र के एक यात्रा प्रचालक के पास जाकर निम्नलिखित सूचनाएँ एकत्र करने का प्रयास कीजिए,

अ) यात्रा प्रचालन से पूर्व यात्रा प्रचालक ने कौन से कदम उठाए थे?

ब) आपके अनुसार यात्रा प्रचालन शुरू करने के लिए क्या-क्या आवश्यकताएँ होती हैं।

स) यात्रा प्रचालक प्रारम्भ में किन कठिनाईयों का मुकाबला करते हैं

एकत्र की गई जानकारी के आधार पर यात्रा प्रचालक की स्थिति रिपोर्ट तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्न 2.1

1. पर्यटन उद्योग की अवधारणा क्या है?
2. पर्यटन उद्योग को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक क्या हैं?

2.3 पर्यटन के साथ सम्बद्ध सेवाएँ

पर्यटन के अनेक घटक हैं। पर्यटन के प्रमुख घटकों को उत्पादक, प्रचालक, ट्रेवल एजेन्ट और पर्यटकों के रूप में रखा जा सकता है। उत्पादक पर्यटन की आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न संसाधन

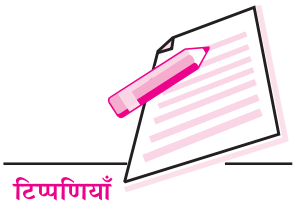

निर्मित करता है। इन संसाधनों को सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है। आइये हम संक्षेप में एक-एक करके उन पर विचार करें। कुल मिलाकर पर्यटन उद्योग के अनेक प्रमुख घटक हैं। उनमें प्रमुख हैं-

I. निवास
II. भोजन और पेय पदार्थ
III. यात्रा कारोबार
IV. परिवहन
V. आकर्षण
VI. आयोजन और सम्मेलन
VII. पर्यटन सेवाएँ

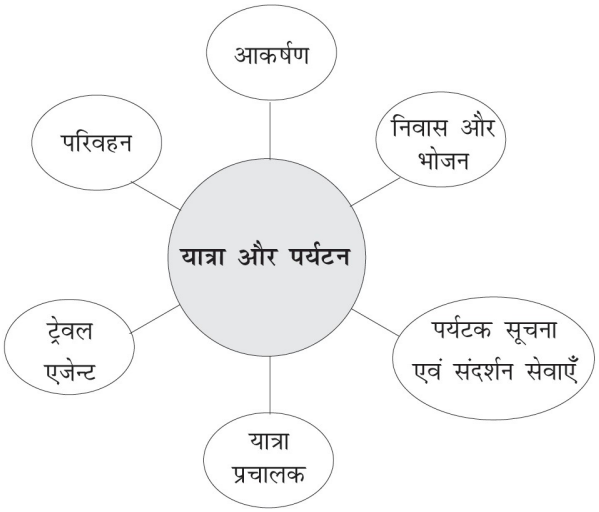

चित्र 2.2: पर्यटन उद्योग के घटक

2.3.1 निवास

निवास, पर्यटन उद्योग का तेजी से बढ़ता क्षेत्र है। इसकी भूमिका अतिमहत्वपूर्ण है और यह उद्योग का आधारभूत घटक है। होटलों की माँग लगभग पूरे वर्ष रहती है। पर्यटकों के लिए निवास को भिन्न-भिन्न तरीकों से वर्गीकृत किया जाता है जैसे स्टार देकर, आकार, स्थान, अतिथियों के प्रकार, वैकल्पिक प्रबन्ध इत्यादि द्वारा।

पर्यटकों/अतिथियों को प्रदान की गई सेवाओं और सुविधाओं के आधार पर स्टार दिए जाते हैं। यह वर्गीकरण केन्द्रीय सरकार की होटल रेस्टोरेण्ट अप्रूवल क्लासीफिकेशन कमेटी (HRACC) द्वारा किया जाता है। एक स्टार वाले होटल में स्टार वर्गीकरण के अन्तर्गत बहुत कम सुविधाएँ और सेवाएँ उपलब्ध होती हैं। जबकि पाँच सितारा में सेवाएँ और सुविधाएँ अधिकतम होती हैं। अब कुछ सात सितारा होटल भी उभर रहे हैं जहाँ आरामदायी सुविधाओं की अधिकता है। ये सुविधाएँ गुणवत्ता और स्थान की दृष्टि से उच्चतम होती हैं। स्टार देने के अतिरिक्त कुछ प्राइवेट निजी होटल और अतिथि गृह भी सस्ते वर्ग में निवास सुविधाएँ उपलब्ध करवा रहे हैं जैसे शयनागार और बिस्तर तथा नाश्ता।

स्थान के आधार पर वर्गीकरण: होटलों का वर्गीकरण करने में स्थान भी एक महत्वपूर्ण घटक है। कुछ की माँग उनके स्थान के कारण अधिक होती है जैसे अनेक होटल हवाई अड्डा, रेलवे स्टेशन अथवा बस डिपो के निकट स्थित होते हैं। राजमार्गों पर स्थित होटल भी माँग में होते हैं क्योंकि पर्यटकों को रास्ते में एक रात रूकने की जरूरत होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत उन्हें आगे फिर कारोबारी या वाणिज्यिक निवास के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जो प्राय: बड़े शहरों, व्यापारिक केन्द्रों, पर्यटन केन्द्रों पर स्थित होते हैं। शहरों और कस्बों की बाहरी सीमा पर अर्द्धशहरी निवास उपलब्ध करवाया जाता है। इसी प्रकार हवाई अड्डे के निकट भी निवास उपलब्ध होता है। पहाड़ी क्षेत्रों अथवा राजमार्गों पर रिर्जाट्स और मोट्लस भी पर्यटकों की जरूरत को पूरा करते हैं।

अतिथि के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण: सुविधाओं, स्थान और निजता के साथ-साथ अतिथियों की देय क्षमता के आधार पर निवासों को वाणिज्यिक, स्वीट, एयरपोर्ट, होटल, रिजॉर्ट और मोटल में वर्गीकृत किया जाता है। कमरे के किराये के आधार पर पहले तीन प्रकार के होटल बहुत उच्च स्तरीय होते हैं। स्वीट शायद सबसे अधिक आरामदेह उच्च स्तरीय निवास होता है जिसमें बेडरूम (शयन कक्ष) के अतिरिक्त लिविंग रुम (रहने का कमरा) और डाइनिंग रुम (खाना खाने का कक्ष) होता है। यह अमीर श्रेणी के लोगों जैसे व्यापारी, फिल्म स्टार्स और राजनीतिज्ञों की जरूरतों को पूरा करते हैं।

पूरक/वैकल्पिक निवास के आधार पर वर्गीकरण: उपरोक्त उल्लिखित वर्गों के अतिरिक्त अन्य प्रकार के निवास भी उपलब्ध होते हैं। उनमें सर्किट हाऊस, युवा हास्टल, यात्री निवास, फारेस्ट लॉज, डाक बंगले और फार्म हाउस होते हैं। सर्किट हाऊस उच्च श्रेणी के सरकारी अधिकारियों को निवासीय कमरे प्रदान करता है। इनको इस प्रकार बनाया जाता है कि ये अच्छा निवास और भोजन दें। दिनों और सेवा के आधार पर नकद भुगतान लिया जाता है। युवा हास्टल युवा पर्यटकों को सस्ते कमरे उपलब्ध कराते हैं। यात्री निवास प्राय: सस्ता निवास होता है जो समुद्री तटों, झीलों, रेलवे स्टेशनों, तीर्थ स्थलों इत्यादि के निकट पाए जाते हैं। फारेस्ट लॉज वन्य जीवन अभ्यारण्यों को देखने आए पर्यटकों के लिए होता हैं। डाक बंगले सरकारी काम पर आए सरकारी कर्मचारियों के लिए होते हैं।

2.3.2 भोजन और पेय पदार्थ

भ्रमण पर आए पर्यटकों की बढ़ती संख्या ने भोजन और पेय पदार्थों की माँग को बढ़ा दिया है। पर्यटन के इस घटक ने युवाओं की बड़ी संख्या को रोजगार दिया है। उपभोक्ताओं की पसन्द में परिवर्तन बहुत स्पष्ट है। इससे मुकाबला बढ़ रहा है और उत्पादों को परिष्कृत और विशिष्ट बनाया जा रहा है। बहुत से रेस्तरां विशेषज्ञ बनते जा रहे हैं और उनकी अपनी चेन निर्मित हो रही है। उनके उत्पादों में विविधता है। भोजन और पेय क्षेत्र में बाजार-बल द्वारा प्रयोग की जाने वाली उपभोग की सभी वस्तुएँ शामिल होती हैं। उनकी माँग बहुत अधिक है और सड़क के किनारे उनकी दुकानें खुलती जा रही हैं। उनकी माँग होटलों, पब्स, लाउंजेस, भोजन कक्षों, कॉफी की दुकानों, फास्ट फूड केन्द्रों और मयखानों में ज्यादा होती है।

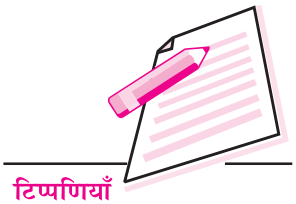

2.3.3 यात्रा व्यापार (ट्रैवल ट्रेड)

पर्यटकों द्वारा यात्रा के दौरान किया जाने वाला व्यापार यात्रा व्यापार (ट्रैवल ट्रेड) कहलाता है। इसमें यात्रा के लिए आरक्षण (रिजर्वेशन) बेचना/ बुक करना, आवास, टूर, परिवहन, भोजन और पेय इत्यादि शामिल होते हैं। यह बुकिंग दो वर्गों में की जाती है- सभी चीजों की समग्र रूप से अथवा व्यक्तिगत स्तर पर। समग्र टूर बुकिंग वह है, जिसमें पर्यटकों को टूर ऑपरेटरों और पर्यटकों के बीच निर्धारित/ परस्पर वार्तालाप द्वारा निश्चित राशि का भुगतान करना होता है। साधारणतया, टूर ऑपरेटर, पर्यटकों के समूह के आकार और अवधि के आधार पर दर निर्धारित करते हैं। यहाँ तक कि वे शुल्क कम करने के लिए वार्तालाप भी करते हैं। पर्यटन के किसी क्षेत्र के लिए, किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह के लिए, टूर ऑपरेटर द्वारा रिजर्वेशन की बुकिंग अधिकतर निर्धारित दर पर होती है। इसमें यात्रा के लिए आरक्षण की बिक्री/ बुकिंग, आवास, टूर, परिवहन, भोजन और पेय अथवा कुछ और भी शामिल होता है। इसे खुदरा यात्रा संचालन (रिटेल ट्रैवल ऑपरेशन) कहते हैं। संपूर्ण समग्र पैकेजों में यात्रा, आवास, दर्शनीय स्थलों की यात्रा, भोजन, मनोरंजन इत्यादि सभी कुछ का ध्यान रखना शामिल होता है। टूर ऑपरेशन के इस समूह को कभी-कभी थोक मात्रा में यात्रा का संचालन (होलसेल टूर ऑपरेशन) कहते हैं।

2.3.4 परिवहन

परिवहन, पर्यटन की गतिविधियों के अत्यावश्यक घटकों में से एक है। पारंपरिक रूप से परिवहन और पर्यटन विकास में परस्पर 'चूजे और अंडे' जैसा अभिन्न रिश्ता माना जाता है। परिवहन, संबंधित क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक विकास को पूरा करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान करता है। इससे दूरी की भौतिक बाधा को दूर किया जाता है और किसी दूसरे स्थान पर मनुष्यों के जाने के लिए संचलन की जरूरतों को परिवहन ही पूरा करता है। पर्यटन के शुरू होने के स्थल और गंतव्य स्थल के बीच परिवहन ही संबंध जोड़ता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो भी मानवीय संचलन संभव हो रहा है, वह सब परिवहन के विविध साधनों के कारण ही संभव हो रहा है। लाखों की संख्या में पर्यटक यह अपेक्षा रखते हैं कि उन्हें समुचित दरों पर सुरक्षित, शीघ्र और आरामदेह तरीके से उनके गंतव्यों तक ले जाया जाएगा। वास्तव में, परिवहन और इससे जुड़े सहायक ढांचे के कारण ही इतने बड़े स्तर पर और बहुत कम समस्याओं के साथ, मानवीय संचलन सुलभ हो सका है। परिवहन क्षेत्र को चार प्रकारों में विभाजित किया गया है। यह है हवाई, रेल, सड़क और जल-परिवहन। प्रत्येक की अपनी विशेषताएँ और एक-दूसरे की तुलना में लाभ हैं। यह विभिन्न आर्थिक स्थिति वाले वर्गों के सभी यात्रियों/पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इन सभी की विशेषताओं का एक अति संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

रेलवे : किसी भी देश अथवा राष्ट्र के समूह में, जहाँ रेलवे की सुविधा उपलब्ध हो, किसी लंबी दूरी की यात्रा के लिए रेलवे बहुत लाभदायक है। यह परिवहन का सबसे सस्ता साधन है और प्रत्येक वर्ग के यात्रियों की सेवा करता है। लोगों की बड़ी संख्या इससे एक साथ यात्रा कर सकती है। यदि लंबी दूरी की यात्रा करनी हो तो सड़क की तुलना में रेलवे परिवहन का बहुत ही सुविधाजनक

माध्यम है। यह सड़क की तुलना में तेज और सुरक्षित है। भारत में पर्यटकों के लिए विशेष गाड़ियाँ शुरू की गई हैं। इनमें यात्रा करने के दौरान हर प्रकार की सुविधा प्रदान की जाती है। रेल परिवहन (रेलवेज ट्रांसपोर्ट) और इसकी विशेषताओं के संबंध में आप इन्टरनेट से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चित्र 2.3: रेल परिवहन

स्रोत: https://www.google.co.in/search?q=railways&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ei=

हवाई मार्ग : विदेशी पर्यटकों के लिए हवाई मार्गों का बहुत महत्व है, क्योंकि अनेक देश रेल अथवा सड़क मार्ग से जुड़े हुए नहीं होते। यह सर्वाधिक तेज गति से चलने वाला परिवहन है, परंतु बहुत महंगा है। अनेक देश हवाई मार्ग से जुड़े हैं और इससे यात्रा की दूरी में कमी आती है। हवाई परिवहन ने पर्यटन को बहुत अधिक बढ़ाया है, विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को।

चित्र 2.4: हवाई परिवहन

सड़क मार्ग : सड़कें घर से घर तक परिवहन सेवाएँ उपलब्ध करवाती हैं और यह एक-दूसरे को जोड़ने वाली सभी परिवहन प्रणालियों को परस्पर जोड़ती हैं। इसने पर्यटकों के लिए गंतव्यों तक पहुंचने को संभव बनाया है। हवाई परिवहन ने संपूर्ण विश्व को आपके दरवाजे तक ला खड़ा किया है, परंतु सड़क परिवहन ने दरवाजे के भीतर के सुविधा कक्षों को परस्पर जोड़ा है। सड़क परिवहन के महत्व और इसकी विशेषताओं के संबंध में आप 'पर्यटन के लिए परिवहन' संबंधी पाठ 5 में पढ़ सकते हैं। वास्तव में यह पर्यटक को सीधे स्मारक, पूजा स्थल अथवा मेजबान के घर तक ले जाती हैं।

चित्र 2.5: सड़क परिवहन

स्रोत: http://bangaloreinfraplus.blogspot.in/2012/02/artists-impression-ofnayandahalli.html

जलमार्ग : जलमार्गों में फैरी, क्रूज, वाटर टैक्सी और अन्य प्रकार के जल परिवहन शामिल हैं। ये खुले सागरों अथवा अन्तर्देशीय परिवहन भी हो सकते हैं। मोटरचालित वाहनों से पहले जल परिवहन बहुत लोकप्रिय था। प्राचीनकाल में, जल मार्ग को परिवहन का एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता था। सड़क, रेल और हवाई सेवाओं का महत्व बढ़ने के कारण यात्रियों द्वारा जल परिवहन की सेवाओं का लाभ लेने में अत्यधिक कमी आई है। जल परिवहन के लिए पाठ 5 में पढ़ सकते हैं।

चित्र 2.6: जल परिवहन

स्रोत: https://www.google.co.in/search?hl=en&site=imghp&tbm=isch&source=hp&biw

टिप्पणियाँ

क्रियाकलाप 2.2

अपने क्षेत्र के विभिन्न होटलों में जाइये और वहाँ कमरों की संख्या, एक समय पर अतिथियों की अधिकतम संख्या, अतिथियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के बारे में सूचनाएँ एकत्र कीजिए तथा पर्यटकों के लिए आवश्यक गतिविधियों की एक सूची बनाइये।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. पर्यटन उद्योग के कौन-कौन से विभिन्न घटक हैं?
2. आवास वर्गीकरण के संबंध में संक्षिप्त विवरण दें।
3. विविध प्रकार के परिवहनों पर चर्चा कीजिए।

2.3.5 आकर्षण

साधारणतया, पर्यटकों के लिए आकर्षण से तात्पर्य है किसी क्षेत्र/ गंतव्य स्थल पर यात्रा करने की इच्छा में वृद्धि। अत: इसमें शामिल ऐतिहासिक और धरोहर (हैरिटेज) स्थल, संग्रहालय, कला दीर्घाएँ (आर्ट गैलरीज), वनस्पति उद्यान (बॉटैनिकल गार्डन्स), मनोरंजन पार्क्स, जलजीव शाला (एक्वेरियम), चिड़ियाघर (जू), वाटर पार्क्स, सांस्कृतिक आकर्षण, समुद्री तट (बीच), गुणवत्ता की दृष्टि से सस्ती चिकित्सा सुविधाएँ, पारंपरिक स्वास्थ पुन: ऊर्जा (रीजॉविनेटिंग) प्राप्ति केंद्र इत्यादि पर्यटकों के लिए आकर्षणों में से कुछ हैं। अत्यधिक विविधताओं के कारण, भारत में अनेक पर्यटन आकर्षण हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे सारणी के रूप में किया गया है :

हैरिटेज स्थल	सांस्कृतिक	समुद्री तट	स्वास्थ्य/ चिकित्सा	वन्य जीव/पार्क
अजंता एलोरा की गुफाएँ	होली	अंजुना, गोवा	आयुर्वेद	कॉर्बेट नैशनल पार्क
खजुराहो	दीपावली	कोवलम, केरल	योग	सरिस्का नैशनल पार्क
कुतुबमीनार	पोंगल	मैरिना, गोवा	ध्यान (मेडिटेशन)	रणथंभोर नैशनल पार्क
ताजमहल	कुंभ मेला	जुहू, महाराष्ट्र	शिरोधारा तेल चिकित्सा (थिरैपी)	काजीरंगा नैशनल पार्क
कोणार्क मंदिर	पुष्कर मेला	बागा, गोवा	पंचकर्म चिकित्सा	कान्हा नैशनल पार्क
स्वर्ण मंदिर	सूरजकुंड मेला	दोना पौला, गोवा	भाप चिकित्सा	गिर नैशनल पार्क
अक्षरधाम तमिलनाडु	मरुस्थल उत्सव	मामल्लापुरम,	सस्ती शल्य-चिकित्सा सर्जरी	मुदुमलय अभयारण्य
बोध गया	संगीत और नृत्य	पुरी, ओडिशा	नालौर	पेरियार नैशनल पार्क

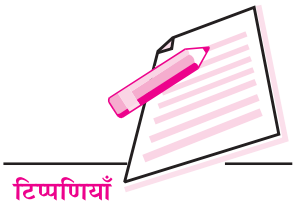

यह सभी पर्यटकों के लिए बड़ा आकर्षण हैं और पर्यटक इन क्षेत्रों/ गंतव्यों की ओर बार-बार जाने के लिए खिंचे चले आते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि इस देश की विस्तृत लंबाई-चौड़ाई और इससे जुड़ी विविधतापूर्ण भौतिक विशेषताएँ, जिसमें समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विविधता समाहित है। यह विविधता है दक्षिण में स्थित समुद्र तट तो उत्तर में ऊंची हिमालयी श्रृंखला, पश्चिम में राजस्थान में मरुस्थल तो पूर्व में मेघालय में अत्यधिक नमी वाले क्षेत्र। देश के सभी भागों में अनेक प्रकार के आकर्षण निहित हैं। यही कारण है कि भारत में पर्यटन उद्योग में अत्यधिक विकास (वृद्धि) विशेष रूप से हाल ही की कुछ दशकों के दौरान देखने में आई है।

2.3.6 समारोह (इवेंट्स) और सम्मेलन (कान्फ्रेंसिज)

अनेक शैक्षणिक, पेशेवर (प्रोफैशनल), व्यावसायिक अथवा नौकरशाही (ब्यूरोक्रैटिक) से संबद्ध समारोह (इवेंट्स), बैठकें और सम्मेलनों इत्यादि की व्यवस्था की जाती है। इनका आयोजन इवेंट्स के लिए चुने गए विषयों के आधार पर किया जाता है। इसमें विश्व के सभी भागों से लोगों को आमंत्रित किया जाता है। इन लोागें से समारोह (इवेंट) स्थलों और इसके आस-पास के क्षेत्रों में यात्रा की अपेक्षा की जाती है। निर्धारित स्थान पर, आवास और भोजन की आवश्यकता इनके लिए अनिवार्य होती है। इनके मनोरंजन की व्यवस्था भी की जाती है। इसमें पर्यटक की ओर से धन खर्च करना भी शामिल होता है। वे अपनी जेब से धन खर्च करते हैं अथवा इसे प्रायोजित कराया जाता है। कभी-कभी जिस संगठन में वे काम कर रहे होते हैं। वे ही इसका खर्च उठाते हैं। कुछ प्रतिनिधियों की आयोजकों द्वारा वित्तीय सहायता भी की जाती है। इन आयोजकों को भी सरकार, मंत्रालयों, व्यावसायिक घरानों, शैक्षणिक संस्थाओं इत्यादि से वित्तीय सहायता प्राप्त होती है।

सम्मेलन (कॉन्फ्रेंस), सेमिनार, बैठकें (मीटिंग्स), व्यापार मेले (ट्रेड शो), प्रदर्शनियाँ और समागम (कनवेंशन) इत्यादि अनेक समुदायों के लिए बड़े व्यवसाय हैं। इस प्रकार के आयोजनों से स्थानीय लोग, पर्यटक सेवाओं और उत्पादों को उपलब्ध करवाकर और बेचकर काफी धन कमा सकते हैं। जब लोग इन स्थानों पर आते हैं तो वे नजदीक के क्षेत्र/ गंतव्य स्थलों पर भ्रमण के लिए जाते हैं। इसलिए विश्व के अधिकांश शहर समय-समय पर अनेक बैठकों और सम्मेलनों को आयोजित करते हैं। विशषत: पर्यटकों की रूचि के स्थलों जैसे गोवा, दिल्ली, मुम्बई, कोलकता में आयोजित करते हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली में प्रगति मैदान ऐसे आयोजनों के लिए राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, लगभग पूरे वर्ष ही आरक्षित (बुक) रहता है। भारत और विदेशों में अन्य शहरों और कस्बों का भी लगभग यही हाल है।

3.4.7 पर्यटन सेवाएँ

पर्यटन सेवाओं के क्षेत्र (सेक्टर) में अनेक संगठन, संस्थाएँ, सरकारी एजेसियाँ और कंपनियाँ इत्यादि शामिल होती हैं। इन सभी के पास वे सभी विशिष्ट सेवाएँ उपलब्ध होती हैं, जिनकी पर्यटन उद्योग में आवश्यकता होती है। यह मूलत: एक प्रकार के विनियामक (रेगुलेटर) होते हैं, जो सेवाएँ उपलब्ध करवाते हैं। वे न सिर्फ यात्रियों और पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, बल्कि

किसी विशिष्ट क्षेत्र में संवृद्धि (ग्रोथ) और विकास के उद्देश्य को भी पूरा करते हैं। अत: शोध करना भी पर्यटन का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाता है। पर्यटन में शोध किए जाने के अतिरिक्त पर्यटन के संबंध में विज्ञापन, विपणन, शिक्षण/ सूचित करना इत्यादि भी पर्यटन सेवाओं के अन्य अच्छे घटक हैं।

बुनियादी आधारभूत ढांचा (इन्फ्रास्ट्रक्चर) उपलब्ध करवाने में सरकार बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, ताकि पर्यटन भली-भाँति विकसित और व्यवस्थित हो सके। यह धन, सूचना और सेवाएँ उपलब्ध करवाकर इस व्यवसाय को प्रोत्साहित करती है। इस प्रक्रिया में सरकार पर्यटकों की माँगों, समस्याओं और पृष्ठभूमि को जानने के लिए समय-समय पर शोध करवाती है। अत: यह पर्यटकों को दी जाने वाली सेवाओं और सुविधाओं की विपणन योजना (मार्केटिंग प्लैनिंग) और प्रबंधन को सहायता करने का महत्वपूर्ण साधन है। पर्यटन में इनकी माँग का आकलन किया जाता है और अंतत: कोई निर्णय लिया जाता है जो पर्यटन के दायरे की वृद्धि में सहायक होता है। इन सभी के लिए, एक समुचित और संतुलित योजना और नीतियों की आवश्यकता होती है, जिसके लिए तद्नुसार कार्य करने के लिए सरकार एक सही/ समुचित अधिकारी होता है। प्रतिदिन, समाचार-पत्रों के अनेक पृष्ठों में पर्यटन संबंधी भरे हुए दर्जनों विज्ञापन देखे जा सकते हैं। यह विज्ञापन विविध समूहों से संबंधित होते हैं। उदाहरण के लिए- हनीमून ट्रिप, तीर्थयात्रा ट्रिप, क्रूज ट्रिप, पर्वतारोहण, राफ्टिंग, राष्ट्रीय स्थलों की यात्रा, अंतरराष्ट्रीय यात्रा, यह सभी पर्यटन के प्रोत्साहन के साथ-साथ अपने निजी वित्तीय लाभ के लिए मिल-जुलकर काम करते हैं।

क्रियाकलाप 2.3

अपने क्षेत्र के किसी पर्यटक गतिविधि केन्द्र पर जाइए और जानिए कि वहाँ कौन-कौन से आकर्षण उपलब्ध हैं। उन आकर्षणों की एक सूची बनाइए। उन आकर्षणें को अपनी सूचना के आधार पर अथवा पृष्ठ पर दी गई तालिका के आधार पर वर्गीकृत कीजिए। उन आकर्षणों पर एक संक्षिप्त नोट लिखिए।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. पर्यटन के लिए कुछ प्रमुख स्रोतों के नाम लिखिए।
2. पर्यटन को प्रोत्साहित करने में सम्मेलनों (कान्फ्रेन्सिज) के महत्व की चर्चा कीजिए।
3. पर्यटन को सुविधाजनक बनाने में सरकार की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

2.4 पर्यटन में ताजा रुझान (अभिवृतियाँ)

भारत में पर्यटन के विकास और बढ़ावे के लिए राष्ट्रीय नीतियाँ संघीय पर्यटन मंत्रालय द्वारा अन्य केन्द्रीय मंत्रालयों, राज्य सरकारों, संघीय क्षेत्रों और निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों के परामर्श और सहयोग से तैयार की जाती हैं। नए प्रकार के पर्यटन को परखने के लिए तथा वर्तमान पर्यटन को नवीनतम

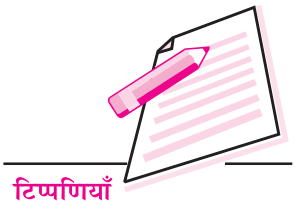

अभिवृतियों के साथ प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रयास किये जाते हैं जैसे हाऊस बोट पर रुकना, ग्रामीण अंचल को अनुभव करने के लिए गांवों में ठहरना। अन्य रूझानों में क्रूज, चिकित्सा, कारोबार, खेल और पारिस्थितिक पर्यटन इत्यादि शामिल हैं।

मध्य बीसवीं सदी से विश्व भर में पर्यटन में बहुत वृद्धि हुई है। पर्यटकों का पूर्व एशिया और प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में आगमन बहुत बढ़ा है। नए अज्ञात स्थल बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं और ऊँची वृद्धि दिखा रहे हैं। वर्ष 2000 से पूर्व यूरोप और अमेरिका मुख्य पर्यटन स्थल थे लेकिन पिछले दिनों उनकी हिस्सेदारी में क्रमशः 10 प्रतिशत और 13 प्रतिशत की कमी हुई है। वर्तमान में अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन का 51 प्रतिशत आराम के लिए यात्रा, मनोरंजन और अवकाश गुजारने से जुड़ा हुआ है। लगभग 15 प्रतिशत पर्यटक व्यापार और व्यावसाय के लिए यात्रा करते हैं। अन्य 27 प्रतिशत मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने के लिए, धार्मिक यात्राओं के लिए और चिकित्सीय पर्यटन करते हैं। बाकी बचे 7 प्रतिशत उपलब्ध आँकड़ो के अनुसार किसी विशेष उद्देश्य के लिए यात्रा नहीं करते। कुल पर्यटकों का 52 प्रतिशत हवाई यात्रा, 38 प्रतिशत सड़क से, 3 प्रतिशत रेल से तथा 6 प्रतिशत जलीय मार्ग से यात्रा करता है। विश्व पर्यटन में रूझानों के बारे में आप अगले अध्याय में पढ़ सकते हैं।

विश्व पर्यटन संघ ने अनुमान लगाया है कि 2020 तक अंतरराष्ट्रीय आगमन 1.6 बिलियन से अधिक हो जाएगा। इनमें से 1.2 बिलियन अन्तः क्षेत्रीय और 0.4 बिलियन लंबी दूरी के यात्री होंगे। पूर्व एशिया और प्रशान्त, मध्य पूर्व और अफ्रीका में प्रतिवर्ष 5 प्रतिशत की वृद्धि की आशा है जबकि विश्व में इनकी औसत वृद्धि 4.1 प्रतिशत होगी। यूरोप और अमेरिका जैसे पुराने क्षेत्रों में वृद्धि दर औसत से कम होगी। पर्यटकों का कुल आगमन दर्शाता है कि 2020 तक तीन उच्च स्थान रखने वाले स्थल यूरोप (717 मिलियन) पूर्व एशिया (397 मिलियन) और अमेरिका (282 मिलियन) के साथ तीसरे स्थान पर होगा।

2.4.1 भारत में पर्यटन के ताजा रुझान

विदेशी पर्यटकों के लिए भारत एक प्रिय स्थल है। 2009 से 2011 तक यहाँ विदेशी पर्यटकों का आगमन विश्व के सभी देशों से खूब तेजी से बढ़ा है। 2011 में भारत में पूर्वी यूरोप से पर्यटकों का आगमन 20.6 प्रतिशत था, जिसके बाद दक्षिण पूर्व एशिया से (18.8 प्रतिशत), पश्चिम एशिया से (18.5 प्रतिशत), पूर्व एशिया से (15.5 प्रतिशत), अफ्रीका से 13.6 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया से 10.9 प्रतिशत, दक्षिण एशिया से 8.8 प्रतिशत, उत्तर अमेरिका से 5.6 प्रतिशत और पश्चिमी यूरोप से 5.0 प्रतिशत रहा।

ऐसा इस कारण से है कि भारत में पर्यटन स्थलों और आकर्षणों की विविधता है। यह भी वास्तविकता है कि भारत एक कम खर्चीला स्थल है। इसको सामान्य पर्यटन के साथ-साथ चिकित्सकीय पर्यटन के सन्दर्भ में देखा जा सकता है। इस कारण भारत में रहना बहुत महँगा नहीं है और लोग यहाँ लंबी अवधि के लिए रुकते हैं। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार विदेशी पर्यटकों का भारत में रुकना सबसे ज्यादा है जो औसत एक महीने से अधिक 31.2 दिन है। इसके बाद आस्ट्रेलिया में 27 दिन, पाकिस्तान में 25 दिन है। भारत में पर्यटन के ताजा रुझान आगामी पाठों में पढ़ सकते हैं।

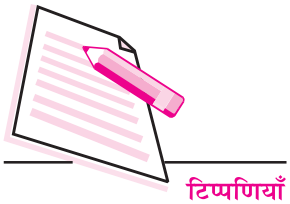

टिप्पणियाँ

2.5 पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में भारत सरकार की भूमिका

पर्यटन मंत्रालय, केन्द्रीय सरकार की विभिन्न एजेन्सियों, राज्य सरकारों, केन्द्र शासित क्षेत्रों और निजी क्षेत्रों के बीच भारत में पर्यटन के विकास और बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने वाली तथा नीतियों और कार्यक्रमों को बनाने वाली शीर्ष एजेंसी है। मंत्रालय का मुखिया केन्द्रीय पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) होता है। मंत्रालय का प्रशासनिक मुखिया सचिव, (पर्यटन) होता है जो महानिदेशक पर्यटन के रूप में भी काम करता है।

पर्यटन के महानिदेशक के पास देश के भीतर 20 कार्यालय, विदेशों में 14 कार्यालय और एक परियोजना 'स्कार्इंग और पर्वतारोहण का भारतीय संस्थान 'गुलमर्ग', शीतकालीन खेल परियोजना (IISM) है।

- केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय के अन्तर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र की ईकाई 'भारतीय पर्यटन विकास निगम' तथा निम्नलिखित स्वायत संस्थान हैं।
- भारतीय पर्यटन और मात्रा प्रबंधन संस्थान (IITTM) एवं भारतीय जल क्रीडा संस्थान (इन्डियन इंस्टीच्यूट आफ वाट्र स्पोर्ट्स)
- राष्ट्रीय होटल प्रबंधन एवं केटरिंग टेक्नालोजी परिषद् एवं होटल प्रबंधन संस्थान।

2.5.1 पर्यटन मंत्रालय की भूमिका और कार्य

- विकास नीतियाँ, प्रोत्साहन वेतन, बाह्य सहायता, प्रोत्साहन, विपणन आदि के सभी नीतिगत मामले।
- भोजन बनाना तथा अन्य मंत्रालयों, विभागों, राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों के साथ समन्वय बनाना।
- मानव संसाधन विकास।
- प्रचार एवं विपणन।
- अनुसंधान, विश्लेषण, निगरानी तथा मूल्यांकन।
- कानून तथा संसदीय कार्य।
- सतर्कता मामले।
- होटल तथा रेस्तरांओं की स्वीकृति एवंम वर्गीकरण।
- यात्रा एजेन्ट, अंतर्गामी यात्रा संचालक (इनबाउन्ड टूर ऑपरेटर) व पर्यटन परिवहन संचालक के लिए स्वीकृति लेना।
- गुणात्मक पर्यटन के लिए पर्यटन के आधारभूत ढाँचे का विकास करना इस मंत्रालय का मुख्य कार्य क्षेत्र है।
- विभिन्न पर्यटन स्थलों व राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों के परिपथों पर पर्यटन के विकास हेतु मंत्रालय के व्यय का 50% से अधिक खर्च किया जाता है।

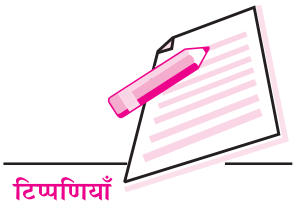

देश के तेजी से बढ़ते आवास सुविधा व खान-पान उद्योग की व्यवसायिक श्रमशक्ति की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, पर्यटन मंत्रालय ने विभिन्न प्रशिक्षण की पुन: स्थापना व पुर्नगठन किया है; ताकि संसाधनों को उपयोग में लाया जा सके और केन्द्रीय पर्यटन उद्योग को बल प्राप्त हो सके। अत: वर्ष 1982, में केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने नेशनल कांउसिल फॉर होटल मैनेजमेंट एण्ड कैटरिंग टॅक्नोलॉजी (NCHMCT) की स्थापना की। देश में तेजी से विस्तार करते व आधुनिकीकृत होते आतिथ्य उद्योग, होटल मैनेजमेंट व कैटरिंग के शैक्षिक कार्यक्रमों ने जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की। परिणामस्वरूप, राष्ट्रीय संघ द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले पाठयक्रम अंतरराष्ट्रीय मानक स्तर तक पहुंच गए।

नेशनल काउंसिल की अपनी वेबसाइट है जिसे डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.एनसीएचएमईटी.ओआरजी (www.nchmet.org) पर पहुँचा जा सकता है।

2.5.2 विपणन उद्देश्य

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार विदेशों में अपने 14 कार्यालयों द्वारा पर्यटन पैदा करने वाले बाजार में भारत को पंसदीदा पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने तथा वैश्विक पर्यटन बाजार में भारत की भागीदारी को बढ़ाने के लिए विभिन्न भारतीय पर्यटन उत्पादों को प्रोत्साहित करने का कड़ा प्रयास कर रहा है। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न पर्यटन संस्थाओं के सहयोग से एकीकृत विपणन व प्रोत्साहन रणनीति अपनायी गयी है।

प्रोत्साहन के इन प्रयासों में प्रिंट व इलैक्ट्रानिक मीडिया, मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग लेना, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ (वर्कशाप) आयोजित करना, रोड शो, विवरिणका छपवाना, यात्रा एजेन्टों एवं यात्रा संचालकों के साथ मिलकर विज्ञापन देना, मीडिया व पर्यटन उद्योग से जुड़े लोगों को भारत भ्रमण के लिए निंमत्रित करना शामिल है।

? क्या आप जानते हैं

- विश्व पर्यटन मेला, शंघाई, में भारतीय पर्यटन को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन प्रोत्साहन पुरस्कार मिला था।
- विश्व पर्यटन मेला, कोरिया, में भारतीय पर्यटन को सर्वश्रेष्ठ मण्डप (बूथ) संचालन पुरस्कार मिला था।
- बिशाऊ अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मेला, दक्षिण कोरिया, में भारत को सर्वश्रेष्ठ पर्यटन प्रोत्साहन पुरस्कार मिला था।

2.5.3 अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय द्वारा 2002 में भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विश्व भर के लोगों के लिए अंतरराष्ट्रीय विपणन अभियान चलाया गया था।

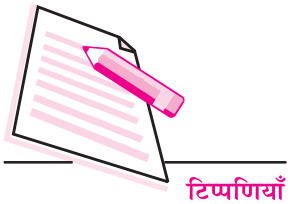

टिप्पणियाँ

भारतीय संस्कृति व इतिहास के विभिन्न पहलुओं जैसे योग, अध्यामिकता आदि को दर्शातें हुए इस अभियान ने भारत को एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में प्रस्तुत किया।

2009 वर्ष में तत्कालीन पर्यटन मंत्री ने अतुल्य भारत अभियान को घरेलू क्षेत्र में भी बढ़ाने हेतु अभियान चलाया।

स्थानीय लोगों को विदशी पर्यटकों से अच्छे व्यवहार व शिष्टाचार हेतु शिक्षित करने के लिए 2008 में मंत्रालय ने एक विशेष अभियान आरम्भ किया। आमिर खान द्वारा प्रस्तुत 'अतिथि देवो भव:' का विज्ञापन इसी अभियान का अंग था।

2.6 भारतीय पर्यटन विकास निगम (ITDC)

भारत में पर्यटन के विकास, प्रोत्साहन व विस्तार का मुख्य चालक भारतीय पर्यटन विकास निगम है। यह अक्टूबर, 1966 को अस्तित्व में आया–

आईटीडीसी के मुख्य उद्देश्य हैं–

- वर्तमान होटलों और होटलों के बाजार, समुद्री तटों, यात्री लॉज तथा रिजोर्ट्स आदि का निर्माण करना तथा अपने हाथ में लेना।
- परिवहन, मनोरंजन, खरीदारी और परम्परागत सेवाएँ प्रदान करना।
- पर्यटन की प्रचार सामग्री का उत्पादन व वितरण करना।
- भारत तथा विदेशों में परामर्श और प्रबंधकीय सेवाएँ प्रदान करना।
- संपूर्ण मुद्रा परिवर्तक के रूप में तथा सीमित मुद्रा परिवर्तक इत्यादि के व्यापार को आगे बढ़ाना।

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु भारतीय पर्यटन विकास निगम पर्यटकों की रूचि के विभिन्न स्थानों पर होटल एवं रेस्तरां चला रहा है। यह परिवहन की सुविधाएँ उपलब्ध करता है और प्रचार सामग्री, मनोरंजन और डयूटी मुक्त खरीददारी की सुविधाएँ प्रदान करता है। निगम अनेक प्रकार की दूसरी क्रियायें व गतिविधियाँ भी चलाता है। भारतीय पर्यटन विकास निगम "द अशोका इंस्टीयूट ऑफ हॉस्पीटिलिटी एण्ड टयूरिज्म मैनेजमेन्ट" चलाता है और इसके द्वारा पर्यटन व अतिथ्य के क्षेत्र में प्रशिक्षण व शिक्षा प्रदान कर रहा है।

? क्या आप जानते हैं

वर्तमान समय में, आईटीडीसी के पास अशोक ग्रूप ऑफ होटलस के 8 होटल, संयुक्त उद्यम के 6 होटल, 2 रेस्तंरा, 12 परिवहन इकाईयाँ, 1 पर्यटक सर्विस स्टेशन, विभिन्न हवाई अड्डों पर 37 ड्यूटी फ्री दुकानें और एक कर मुक्त दुकान तथा दो ध्वनि एवं प्रकाश शो दिखाने का ढाँचा है।

2.6.1 भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (इण्डियन रेलवे कैटरिंग एण्ड टूरिज्म कॉरपोरेशन IRCTC)

जहाँ तक रेलवे के टिकट कटाने का सम्बन्ध है, भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (IRCTC) ने क्रांति ला दिया है। इंटरनेट आधारित रेल टिकट की बुकिंग इसके वेबसाइट के माध्यम अथवा मोबाइल फोन के माध्यम से आज बहुत ही आसान हो गया है। टिकटों को रद्द करना या उसमें बदलाव लाना ऑनलाइन के इस्तेमाल से किया जा सकता है। आजकल आप अपने मोबाइल के माध्यम से या ऑनलाइन पीएनआर की स्थिति जान सकते हैं।

फरवरी 2017 में नई रेलवे खानपान नीति को लागू किया गया जिसके अनुसार भोजन तैयार करने एवं उसके वितरण में भेद करते हुए पूरा करने के लिए आइआरसीटीसी को अनिवार्य बनाया गया है। भोजन की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु, आईआरसीटीसी को नई रसोई बनाने एवं वर्तमान में उपलब्ध रसोई में सुधार करना है।

नई नीति के प्रमुख विशेषताएँ हैं :

1. सभी चलनशील (मोबाइल) इकाई पर खानपान की सेवा का आईआरसीटीसी द्वारा प्रबंधन करना है। आईआरसीटीसी द्वारा पुनः सौपा गया पैंट्री कार का अनुबंध आंचलिक रेलवे द्वारा किया जाएगा।
2. आईआरसीटीसी द्वारा नामित रसोई या स्वामित्व, संचालित और प्रबंधित रसोइयों से ही सभी खाना चलनशील (मोबाइल) इकाई को लेना होगा।
3. खानपान की सेवाओं के लिए किसी भी प्राइवेट लाइसेंस धारक को आईआरसीटीसी सीधे आउटसोर्स नहीं करेगी या किसी अन्य को लाइसेंस नहीं देगी। आईआरसीटीसी अपने पास मालिकाना हक रखेगी और वह इसके लिए जिम्मेवार होगी। यह जिम्मेवारी रसोई बनाने उसको चलाने तथा उसकी गुणवत्ता को बनाए रखने से संबंधित होगा।
4. ट्रेनों में खाना की सेवाओं के लिए आतिथ्य उद्योग से सेवाओं को देने के लिए आईआरसीटीसी काम पर रखेगी।
5. आंचलिक रेलवे के अंतर्गत विभागीय संचालन में चार मौलिक रसोइयाँ हैं। वह है क्षत्रपति शिवाजी टर्मिनस, मुम्बई सेंट्रल टर्मिनस, बल्हारशह और नागपुर। सभी A1 तथा A श्रेणी के स्टेशनों पर रसोई इकाईयाँ या जलपान गृह है। ''जैसा है और जहाँ पर है'' के आधार पर सभी जनआहार तथा सेल रसोईघर को आईआरसीटीसी को सौंपा जाएगा।

? क्या आप जानते हैं

आईआरसीटीसी आई-टिकट भी प्रदान करता है जो सामान्य रूप से आम टिकटों जैसी ही होती है लेकिन यह उनसे अलग होती है जो ऑनलाइन बुक की जाती है तथा पोस्ट द्वारा भेजी जाती है।

'शुभ यात्रा' हाल ही में प्रारम्भ हुआ एक ऐसा कार्यक्रम है जो नियमित रूप से यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए है जिससे पूरे वर्षभर बुक की जाने वाली सभी टिकटों पर वार्षिक फीस भर कर छूट का लाभ ले सकते हैं।

समस्या मुक्त ई-टिकट बुकिंग के लिए रोलिंग डिपोसिट स्कीम (RDS) है। यह यात्रियों को निगम के पास अग्रिम राशि जमा करके सीटें आरक्षित करने की अनुमति देता है।

- **पर्यटन** – आईआरसीटीसी द्वारा घरेलू और विदेशी पर्यटकों के लिए भ्रमण यात्राओं का आयोजन भी किया जाता है। भारत दर्शन, देश भर के महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों को कवर करता है और विशेष रूप से बजट पर्यटकों के लिए ही तैयार किया गया है। इसी प्रकार विशेष लक्जरी ट्रैन जैसे पैलेस ऑन व्हीलस, रॉयल ओरिएन्ट एक्सप्रेस, स्वर्ण रथ, डेक्कन ओडिसी, रॉयल राजस्थान ऑन व्हीलस और बौद्ध सर्किट ट्रनें सभी पयर्टकों, विशेषकर विदेशी पर्यटकों के लिए उपलब्ध हैं।

- **तत्काल आरक्षण** – इस योजना के तहत, यात्री भारतीय रेलवे के इंटरनेट पोर्टल के माध्यम से अल्प समय में अपनी टिकट बुक कर सकते हैं। बुकिंग का समय रोजाना सुबह 10 बजे से है। स्रोत स्टेशन से कोई भी यात्री गाड़ी प्रस्थान के एक दिन पहले तक टिकट बुक कर सकता है।

? क्या आप जानते हैं

सम्पर्क के लिए वेबसाइट हैं-

- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.इण्डियनरेल.जीओवी.इन (www.indianrail.gov.in)
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.आईआरसीटीसी.को.इन (www.irctc.co.in)
- डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.ईएन.विकीपिडी.ओआरजी/विकी/टूरिज्म-इन-इण्डिया (www.en.wikipedi.org/wiki/tourism-in-india)

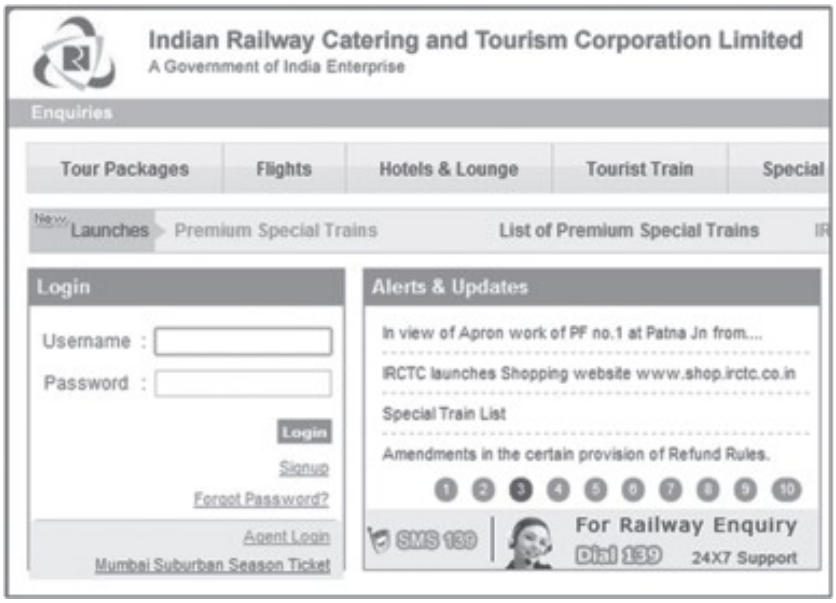

चित्र 2.7: आईआरसीटीसी वेब पेज

2.6.2 राज्य पर्यटन विकास निगम

राज्य निगम का मुख्य उद्देश्य ऐसी परियोजनाएँ और योजनाओं की स्थापना, विकास और निष्पादन करना हैं जो राज्य में पर्यटन को सुगम बनाते हुए उसे तेजी से आगे बढ़ाए। यह पर्यटकों को सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए पर्यटक बंगलों, रेस्तंरा, केफेटेरिया, होटलों और बार आदि का अधिग्रहण, निर्माण व देखरेख भी करता है। निगम सर्वव्यापी पर्यटन (पैकेज टूर), मनोरंजन के लिए मेले तथा त्यौहार, खरीददारी और परिवहन की भी व्यवस्था करता है। वे पर्यटकों की रूचि के स्थलों को विकसित करते हैं और मुद्रित पुस्तिकाओं एवं वेबसाईट्स के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। सभी राज्य पर्यटन विकास निगम पर्यटकों को कमखर्च में अपने राज्य के सबसे आकर्षक स्थल के सौन्दर्य का अनुभव करने का मौका देते हैं। किसी भी राज्य के पर्यटन गतितिधि यों और योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने का सबसे आसान तरीका संबंधित वेबसाइट पर अभिगम्यता है। आपकी सुविधा के लिए 29 राज्यों व 7 केन्द्र शासित प्रदेशों की विभिन्न इंटरनेट वेबसाइट हमने पाठ के अन्त में दी है। अपनी पंसद के राज्य की वेबसाइट पर जाए, जानकारी प्राप्त करें और उसके अनुसार अपने टूर की योजना बनाएं। आपको ज्ञात होना चाहिए कि भारत विश्व के समृद्ध देशों में से एक है जिसे भौतिक, सांस्कृतिक और जीव सम्पदा की धरोहर वरदान में मिली है। भारत के प्रत्येक राज्य, क्षेत्र और कोनों में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ है। राजस्थान के समृद्ध प्राकृतिक सौन्दर्य और महान इतिहास को जानने के लिए आइए हम राजस्थान पर्यटन विकास निगम के बारे में कुछ पढ़े।

2.6.3 राजस्थान पर्यटन विकास निगम (रा. प. वि. नि.) http://www.rajasthantourism.gov.in/home/rtdc.aspx

राजस्थान पर्यटन विकास निगम (रा. प. वि. नि.) भारतीय कम्पनी एक्ट 1956 के अर्न्तगत एक प्राइवेट कम्पनी है। यह 1978 में आरम्भ हुई और बजट आवास प्रदान करने में पथ प्रर्दशक निगम बना, जिसे पर्यटन उद्योग में एक ट्रेड मार्क माना जाता है। रा. प. वि. निगम भलीभांति जानता

चित्र 2.8: पैलेस-ऑन-व्हील रेलगाड़ी

है कि गुणवत्ता प्राप्त करना, उपभोक्ता सेवा संस्कृति, अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत अतिथि सत्कार की कुंजी और पर्यटन उद्योग की सफलता का सूत्र है। रा. प. वि. नि. राजस्थान के प्रसिद्ध स्थलों जैसे ऐतिहासिक किलों, स्थानों, कला व संस्कृति को अनुभव करने का सुअवसर प्रदान करता है। भरपूर प्राकृतिक सुन्दरता और महान इतिहास के कारण, राजस्थान में पर्यटन उद्योग फल-फूल रहा है। प्रत्येक तीसरा विदेशी पर्यटक भारत के गोल्डन ट्राइएंगल के इस भाग में भ्रमण के लिए आता है।

पर्यटकों के लिए जयपुर के महल, उदयपुर की झीलें, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर के किले अधिक लोकप्रिय स्थल हैं। राजस्थान के पर्यटन ने आतिथ्य क्षेत्र में रोजगार को बढ़ाया है। कुछ महत्वपूर्ण स्थानों की खूबसूरती का प्रमाण है चित्र संख्या 2.8 से 2.13।

चित्र 2.9: जयपुर का हवामहल

चित्र 2.10: उदयपुर का लेक पैलेl

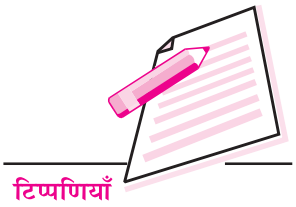

चित्र 2.11: उदयपुर का सिटी पैलेस

चित्र 2.12: जयपुर का जल महल

चित्र 2.13: जोधपुर का महेन्द्रगढ़ किला

क्या आप जानते हैं

विभिन्न राज्यों की पर्यटन इंटरनेट साइट-भारत

राज्य का नाम	पर्यटन साइट
अंडमान और निकोबार द्वीप यू.टी	डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.अंडमानटूरिज्म.इन
आन्ध्र प्रदेश	डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.एपीटीडीसी.इन
अरूणाचल प्रदेश	डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.अरूणाचलटूरिज्म.काम

मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों में अच्छी समझ को बढ़ाने हेतु अजमेर में मोइनुद्दीन चिश्ती दरगाह है जो विश्व में अजमेर शरीफ और अपनी सूफी अवधारणा (सभी के लिए शान्ति) के लिए जाना जाता है।

अजमेर में मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह जो अजमेर शरीफ के नाम से लोकप्रिय है- को पूरे विश्व में मुसलमानों और गैर मुसलमानों के बीच समझ बढ़ाने की अवधारणा के लिए जाना जाता है। अजमेर शरीफ की दरगाह को यह विशेषता प्राप्त है कि उसे विश्व की सभी चिश्ती दरगाहों की जननी कहा जाता है। यदि इस छोटी सी जानकारी ने मोइनुद्दीन चिश्ती के बारे में आपकी उत्सुकता को जगाया है तो आप राजस्थान पर्यटन विकास निगम की इन्टरनेट साईट www.rajasthan tourism.gov.in की सहायता से उनके प्रारम्भिक जीवन और पृष्ठभूमि के बारे में अधिक जानकारी लीजिए, वह भारत कब आए और किस प्रकार भारत में चिश्ती अनुशासन की स्थापना हुई।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. विश्व स्तर पर पर्यटन की प्रगति की विवेचना कीजिए।
2. 2020 तक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की कितनी संख्या के आवागमन का अनुमान है?
3. ग्लोब के किस क्षेत्र से पर्यटक भारत भ्रमण पर आते हैं?

आपने क्या सीखा

- पर्यटन विश्व स्तर पर निरन्तर प्रगति करता हुआ उद्योग है। यह तृतीय क्षेत्र है जो लोगों को रोजगार प्रदान कर रहा है। यह मेजबान देश को विदेशी पर्यटकों के कारण विदेशी मुद्रा कमाने में सहायता कर रहा है।
- यह मेजबान देश को अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सन्तुलन बनाने हेतु सहायता करता है। इसके अनेक घटक हैं। संचालन के लिए स्थान, बहुत बड़ी पूँजी और संचालन के लिए मानवशक्ति तथा आवास, भोजन और पेय, यात्रा व्यापार, परिवहन, सांस्कृतिक आकर्षण और आयोजन जैसे महत्वपूर्ण घटक भी पर्यटन सेवाओं के रूप में काम करते हैं।

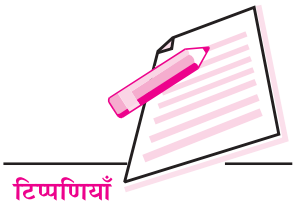

- इन सबकी वहाँ जरूरत पड़ती है जहाँ पर्यटक जाते हैं। पर्यटकों की व्यक्तिगत सुरक्षा और हिफाजत देश में भ्रमण करने वाले पर्यटकों की संख्या को बढ़ाती है। इससे अन्ततः उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों को आर्थिक लाभ पहुँचता है।

पाठान्त प्रश्न

1. पर्यटन उद्योग की अवधारणा क्या है? पर्यटन उद्योग के विभिन्न कारक (घटक) क्या हैं?
2. पर्यटन किस प्रकार एक उद्योग हैं? पाँच कारण लिखिए।
3. मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. पर्यटन एक उद्योग है क्योंकि यह अनेक लोगों को रोजगार के अवसर देता है। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोगों को आकर्षित करता है तथा प्रदान की गई विभिन्न सेवाओं का पर्यटक प्रयोग करते हैं। इसलिए पर्यटन उद्योग है। यह एक उद्योग है क्योंकि इसके लिए अनेक निवेश और प्राप्तियाँ हैं। यद्यपि प्राप्तियाँ एक समान नहीं होती परन्तु कुल मिलाकर यह पर्यटकों को सेवाएँ प्रदान करता है, इसलिए उद्योग है।
2. पर्यटन उद्योग के विभिन्न कारक-

   (अ) इसको स्थान की आवश्कता होती है।

   (ब) जोखिम उठाने के लिए किसी की आवश्यकता होती है।

   (स) पूंजी और कार्यबल आवश्यक होता है।

2.2

1. पर्यटन उद्योग के विभिन्न अवयव हैं-

   आवास, भोजन और पेय, यात्रा, व्यापार, परिवहन, आकर्षण, आयोजक और सम्मेलन तथा पर्यटन सेवाएँ

2. आवास को भिन्न-भिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है।

   अ) सितारा वर्गीकरण

   इ) आकार

ब) अवस्थिति

क) अतिथियों का प्रकार

म) पूरक/वैकल्पिक आवास

3. (अ) रेलवे

(इ) सड़क मार्ग

(ब) वायु मार्ग

(क) जल मार्ग

2.3

1. धरोहर स्थल, सांस्कृतिक, समुद्री तट, स्वास्थ्य/चिकित्सा/वन्य जीव/राष्ट्रीय पार्क
2. सम्मेलनों में पूरे विश्व से लोग आते हैं। यह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन गतिविधियों को तेज करते हैं।
3. पर्यटन के प्रति सरकार की नीति पर्यटन की प्रगति के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त हैं। इसलिए पर्यटन को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

2.4

1. पर्यटन पूरे विश्व में बढ़ रहा है। यह विश्व स्तर पर सर्वाधिक प्रदर्शनीय गतिविधियों में से एक है। अतः यह निरन्तर बढ़ रही है।
2. 2020 तक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या 1.6 बिलियन होने का अनुमान है।
3. पूर्व यूरोपीय क्षेत्र से भारत आने वाले पर्यटक की संख्या कुल पर्यटकों की संख्या का 20.6 प्रतिशत है।